श्रीविष्णुसहस्रनाम

भगवान श्रीविष्णु के एक हज़ार नाम

एलिज़ाबेथ ग्रिमबर्गन द्वारा लिखित परिचय

'श्रीविष्णुसहस्रनाम' संस्कृत भाषा में रचित एक काव्यात्मक स्तोत्र है जिसमें भगवान श्रीविष्णु का महिमागान किया गया है और इसमें उल्लिखित प्रत्येक दिव्य नाम, संगीतमय छन्दात्मक माला में सुन्दर तरीक़े से पिरोया गया एक पुष्प है। श्रीविष्णुसहस्रनाम का पाठ करते समय मैं पाती हूँ कि मैं, एक के बाद एक खिल रहे पुष्पों के मकरन्द रस से सराबोर होती जा रही हूँ और मेरी सम्पूर्ण सत्ता एक तेजोमय एवं आनन्दपूर्ण ऊर्जा में ओतप्रोत हो जाती है। पवित्र स्तोत्रों के पाठ व अध्ययन, दोनों को प्रोत्साहित करने वाली स्वाध्याय की परम्परा में, मैं अकसर इस स्तोत्र में गाए गए प्रत्येक नाम के अर्थ पर और वह नाम स्तोत्र में किस स्थान पर आया है, इसके बारे में अध्ययन व मनन करके अपने अनुभव को समृद्ध करती हूँ।

बाबा जी ने अपने विद्यार्थियों को स्वाध्याय के एक भाग के रूप में, पवित्र स्तोत्रों के नियमित पाठ से परिचित कराया। भारत स्थित सिद्धयोग आश्रम, गुरुदेव सिद्धपीठ में संगीत मण्डली द्वारा की गई रिकॉर्डिंग के साथ हम इनमें से एक स्तोत्र, श्रीविष्णुसहस्रनाम के पाठ का अभ्यास कर सकेंगे।

सन् १९६७ में, बाबा जी ने गुरुदेव सिद्धपीठ आश्रम के दैनिक कार्यक्रम के एक भाग के रूप में इस स्तोत्रपाठ को शामिल किया। कई वर्षों तक यानी जनवरी २००६ तक, दोपहर के स्वाध्याय के रूप में श्रीविष्णुसहस्रनाम का पाठ भोजन के बाद किया जाता था। इस परम्परा का सम्मान करते हुए, वर्ष २०१९ में श्रीगुरुमाई ने श्री मुक्तानन्द आश्रम तथा गुरुदेव सिद्धपीठ में इस पवित्र स्तोत्रपाठ को हर शनिवार के प्रातःकालीन स्वाध्याय के रूप में निर्धारित किया।

भगवान श्रीविष्णु के नाम का अर्थ है 'सर्वव्यापक'; उन्हें परम सत्य माना जाता है जो सृष्टि का सृजन, संरक्षण व पालन करते हैं। स्तोत्र के आवाहन में, भगवान श्रीविष्णु का वर्णन 'महत्तेजः' अर्थात् परम तेजस्वी, 'महद्ब्रह्म' यानी परब्रह्म तथा 'परम परायणम्' अर्थात् सभी प्राणियों की परम गति या परम लक्ष्य[१] के रूप में किया गया है। कहा जाता है कि जब-जब विश्व में अराजकता एवं विनाशक तत्त्वों का आतंक बढ़ जाता है तब ब्रह्माण्डीय व्यवस्था के पुनःस्थापन हेतु सृष्टि के पालनहार, भगवान श्रीविष्णु अवतरित होते हैं। भगवान श्रीराम व भगवान श्रीकृष्ण उनके दो परमप्रिय व सर्वप्रसिद्ध अवतार हैं।

सहस्त्रनाम, भारतीय भक्ति वाङ्मय की एक काव्यात्मक शैली है, जिसे इसके अपने छन्द व लय में गाना होता है। अतः, संस्कृत भाषा में अनुष्टुप छन्द में रचित श्रीविष्णुसहस्त्रनाम में एक हज़ार गुणों को भगवान श्रीविष्णु के नामों के रूप में अभिव्यक्त किया गया है। प्रत्येक नाम एक विशिष्ट पहलू या स्वरूप है जो उनकी दिव्य प्रकृति को अभिव्यक्त करता है और इस प्रकार इस सच्चाई को प्रकट करता है कि परम सत्य एक है और साथ ही साथ उसके रूप अनन्त भी है।

प्रत्येक श्लोक . . . निस्सन्देह प्रत्येक *नाम,* मनन व अध्ययन करने योग्य है। हर एक नाम भगवान श्रीविष्णु के असीमित रूप से समृद्ध व विविधतापूर्ण स्वरूपों को जानने का प्रवेशद्वार है। इस स्तोत्र का अध्ययन करते समय मुझे भगवान श्रीविष्णु के तीसरे अवतार, वराह अवतार की कथा के बारे में कई सन्दर्भ मिले। भूमि अर्थात् पृथ्वी की रक्षा करने के लिए, वराह अपने विशाल दाँतों सहित, महाप्रलयजल में नीचे तक चले गए। उन्होंने पृथ्वी को अपने दाँतों पर उठाकर उसे मुक्त कर दिया और उसे यथास्थान रखकर सृष्टि की व्यवस्था को पुनः स्थापित किया। स्तोत्र में, इस अवतार के कई नामों का उल्लेख है : महावराह, महीभर्ता [पृथ्वी के रक्षक] और वृषाकपिः [वे वराहरूप जो धर्म को पुनःस्थापित करते हैं]।[२] इन नामों पर मनन करने पर मुझे समझ में आया कि परिस्थिति कितनी भी भीषण क्यों न हो, भगवान न केवल अपने भक्तों की बल्कि सम्पूर्ण सृष्टि की रक्षा तथा इसके उत्थान के लिए हमेशा ही उपस्थित रहते हैं, और वे अत्यन्त ही विस्मयजनक, रचनात्मक एवं गूढ़ तरीक़ों से ऐसा करते हैं।

बाबा मुक्तानन्द को श्रीविष्णुसहस्त्रनाम अत्यन्त प्रिय था, जिसका वर्णन उन्होंने "सार्वभौमिक सत्य" के रूप में किया है। बाबा जी आगे कहते हैं, "ॐ विष्णु है। वे विशुद्ध, परम पुनीत परमात्मा हैं। समस्त मुक्त जीवों की वे परम गति हैं। वे अविनाशी हैं। सृष्टि में और मन में जो कुछ भी हो रहा है या चल रहा है, वे उसके परम साक्षी हैं। वे योग हैं।"[३]

श्रीविष्णुसहस्त्रनाम, भारत के प्राचीन महाकाव्य महाभारत के तेरहवें पर्व, 'अनुशासन पर्व' में है। महाभारत में एक महायुद्ध का वर्णन है जिसमें पाण्डव भाइयों ने धर्म की स्थापना करने और कुरू साम्राज्य को उसके न्यायोचित शासक को वापस दिलाने के लिए अपने चचेरे भाई, कौरवों को परास्त किया था। युद्ध के पश्चात् ज्येष्ठ पाण्डव युधिष्ठिर शासन चलाने सम्बन्धी उपदेश के लिए महायोद्धा एवं कौरवों के राजनीतिज्ञ, भीष्म के पास गए। शरशय्या पर लेटे हुए, मृत्यु की प्रतीक्षा कर रहे भीष्म पितामह ने राजधर्म विषय पर नीतियों का कोश उन्हें प्रदान किया। नीति सम्बन्धी ये उपदेश ही 'अनुशासन पर्व' में निहित हैं।

अध्याय १३४ में, युधिष्ठिर ने भीष्म पितामह से पूछा : "इस लोक में एकमात्र देव कौन है? दूसरे शब्दों में, एकमात्र परम लक्ष्य क्या है? कौन-से देव की स्तुति करने से, किन देव की पूजा करने से मनुष्य कल्याण की प्राप्ति कर सकता है?"[४] भीष्म पितामह उत्तर देते हैं : "जगत्प्रभु, देवों के देव, अनन्त, पुरुषोत्तम का उनके सहस्र नामों से निरन्तर स्तवन करने से मनुष्य का सतत उत्थान होता है, वह सब दुःखों से पार हो जाता है।"[५]

श्रीविष्णुसहस्रनाम का अनुशासनपूर्वक तथा एकाग्रता से पाठ करने से इसके दिव्य मन्त्रों की ध्वनि हृदय व मन को शुद्ध करती है, जो अन्ततः इस अभिज्ञान की ओर ले जाती है कि जीव की आत्मा और समस्त सृष्टि में व्याप्त होकर उसका पालन करने वाला मूल तत्त्व अर्थात् भगवान श्रीविष्णु एक ही हैं।

©२०२१एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

---

[१] स्वाध्याय सुधा [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स]।

[२] स्वामी मुक्तानन्द, "Vishnu Sahasranam," in *Swami Muktananda: American Tour 1970* [पीडमन्ट, CA: श्रीगुरुदेव सिद्धयोग आश्रम, १९७४], पृ ६४।

[३] स्वामी मुक्तानन्द, "Vishnu Sahasranam," पृ ६७।

[४] स्वाध्याय सुधा [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स]।

[५] स्वाध्याय सुधा [चित्शक्ति पब्लिकेशन्स]।